# पउमचरिअ में प्रतिपादित यथार्थवादी चिंतन

**वैशाली मिश्रा**
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, सी0एम0पी0 डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश (भारत)

**शोध-सार:-**

भारतीय साहित्य परम्परा में रामकथा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके व्यापक प्रभाव के कारण ही 'रामायण' की विस्तृत एवं समृद्ध परम्परा प्राप्त होती है। रामायण की यह समृद्ध परम्परा एक क्षेत्र तक सीमित न होकर विभिन्न संस्कृतियों एवं भाषाओं में व्यापक रूप से प्राप्त होती है। इसी परम्परा के अन्तर्गत जैन धर्म में भी रामकथा को आधार बनाकर अनेक रामकाव्यों की रचना की गई है, जिसमें प्रथम महाकाव्य विरचित करने का श्रेय 'आचार्य विमलसूरि' को प्राप्त है, जिन्होंने प्राकृत महाकाव्य 'पउमचरिअ' की रचना की। पउमचरिअ में रामकथा को जैन परम्परा एवं संस्कृति के अनुरूप प्रतिपादित करके उसे नवीन रूप प्रदान किया गया है। इसमें दार्शनिक, आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ यथार्थवादी धारणा का भी समन्वय प्राप्त होता है। पउमचरिअ में सामाजिक जीवन, पारिवारिक संबंध, राजनीति और नैतिक संघर्ष आदि को वास्तविक धरातल पर प्रस्तुत किया गया है, जो विमलसूरि की यथार्थवादी विचारधारा का परिचायक है। इन्होंने यथार्थता को धार्मिक उद्देश्यों के आधार पर व्यक्त किया है, जो जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को समझने तथा उचित मार्ग अपनाने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

**मुख्य शब्द-** रामकथा, जैन संस्कृति, पउमचरिअ, यथार्थवाद, मानवीकरण, कर्मवाद, अहिंसा।

**प्रस्तावना:-**

जैनाचार्य विमलसूरिकृत 'पउमचरिअ' को सामान्यतः आदर्श, धर्म एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना करने वाले 'आध्यात्मिक महाकाव्य' के रूप में देखा जाता है, किन्तु इसमें यथार्थता का भी प्रभावशाली चित्रण प्राप्त होता है। इसमें यथार्थवादी विचारधारा से तात्पर्य तत्कालीन सामाजिक, पारिवारिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों को वास्तविक रूप में प्रकट करने से है। विमलसूरि ने 'पउमचरिअ' में पात्रों एवं घटनाओं को दैवीय या अलौकिक रूप में प्रस्तुत न करके मानवीय एवं वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप प्रतिपादित किया है। इसके लिए इन्होंने मानवीय पुरुषार्थ, तर्क, कर्मसिद्धान्त और नैतिक व्यवहार का आश्रय लिया है।

विमलसूरि ने बाल्मीकि रामायण की कथावस्तु में किंचित संशोधन करके अपने यथार्थवादी विचारधारा को प्रस्तुत किया है।[1] इसके लिए इन्होंने पात्रों का मानवीकरण, अहिंसा एवं कर्मवाद को प्रधानता, धर्म को प्राथमिकता, मानवीय दुर्बलताओं को स्वीकृति, सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थता आदि को प्रमुखता दी है।

**(i) पात्रों का मानवीकरण:-** विमलसूरि ने सर्वप्रथम पात्रों का मानवीकरण करके अपने यथार्थवादी विचारधारा को प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपने महाकाव्य को स्वाभाविक एवं आडम्बर रहित बनाने के लिए[2] पात्रों का मानवीकरण

Published: 24 November 2026
DOI: https://doi.org/10.68504/SPIJSH.2026.v3.i11.45966
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

किया है, जिसमें पात्रों को ईश्वरीय अवतार न मानकर उदार मानव के रूप में चित्रित किया गया है। इनके पात्रों में गुण एवं दोष दोनों का समावेश मिलता है, जिस कारण से उनके चरित्र उन्नत एवं अवनत बनते हैं।

इन्होंने राक्षस एवं वानर को दैत्य एवं पशु न मानकर 'नृवंशीय' माना है।[3] इसमें राक्षस और वानर वंशविशेष के नाम हैं। इनमें से जो विद्याधर द्वीपों की रक्षा करते हैं, वे 'राक्षसवंश' के कहलाए-

**रक्खन्ति रक्खसा खलु, दीवा पुण्णेण रक्खिया जेण।**

**तेणं चिय रवयराणं, रक्खसनामं कयं लोए।।[4]**

इसी प्रकार राजा अमरप्रभ ने वानर के चिन्ह से छत्रादि को चिन्हित करके 'वानरवंश' का प्रादुर्भाव किया-

**वाणरचिन्धेण इमे, छत्ताइ निवेसिया कई जेण।**

**विज्जाहरा जणेणं, वुच्चन्ति हु वाणरा तेणं।।[5]**

इस प्रकार विमलसूरि ने राक्षस एवं वानर वंश का मानवीकरण करके उनका वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है।

इसके अतिरिक्त पउमचरिअ में राम को जैन धर्मावलम्बी और रावण को धार्मिक व व्रती पुरुष[6] के रूप में अंकित किया गया है। इसमें 'राम' को अहिंसा की प्रतिमूर्ति के रूप में स्वीकार किया गया है, जो स्वयं रावण-वध नहीं करते हैं-

**सो एवभणियमेत्तो, चक्कं नारायणो भमाडेउं।**

**पेसेइ पडिवहेणं, लंकाहिवइस्स आरुट्ठो।।[7]**

इसमें रावण को विद्याधर की भूमिका में चित्रित किया गया है, जो धार्मिक और व्रती है। पउमचरिअ में रावण अनन्तवीर्य मुनि की उपासना करके उनके सान्निध्य में 'अप्रसन्न स्त्री की अभिलाषा न करने का एकमात्र व्रत धारण' कर लेता है-

**जइ वि हु सुरूववन्ता, परमहिला तो वि हं न पत्थेमि।**

**नियया वि अप्पसण्णा, विलया एयं वयं मज्झ।।[8]**

धर्म एवं विद्वता से सम्पन्न होने पर भी उसमें अवगुण विद्यमान थे, जिसके परिणामस्वरूप वह कामासक्त होकर सीता का अपहरण कर लेता है। किन्तु कुछ समय पश्चात् वह अपने निन्दनीय कार्य के लिए स्वयं को धिक्कारता है, जो रावण के मानसिक द्वन्द्व को प्रदर्शित करता है।

इस प्रकार विमलसूरि ने पउमचरिअ में पात्रों को स्वाभाविक और उदार रूप से चित्रित करके अपनी यथार्थवादी विचारधारा की पुष्टि की है।

**(ii) अहिंसा और कर्मवाद का यथार्थ चित्रण:-** पउमचरिअ में जैन दर्शन का प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इसमें अहिंसा एवं कर्म का व्यावहारिक एवं यथार्थवादी चित्रण प्राप्त होता है। इसमें उद्धृत किया गया है कि धर्म का मूल अहिंसा है-

**हवइ अहिंसा मूलं, धम्मस्स जिणुत्तमेहि परिकहियं।[9]**

इसमें जीववध को हिंसा माना गया है, जिसे करने से पाप होता है और वह दुःखों का कारण होता है। इसी कारण से पउमचरिअ ने जीववध और पशुबलि रूपी हिंसा का निषेध किया गया है। इस सन्दर्भ में 'रावण-वध' वृत्तान्त प्राप्त होता है, जिसमें राम अहिंसावादी होने के कारण रावण का वध स्वयं नहीं करते हैं, अपितु लक्ष्मण करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप लक्ष्मण पापकर्म में बँध जाते हैं और मृत्यु के पश्चात् नरक को प्राप्त होते हैं।

इसके साथ ही इसमें कर्म एवं उसके परिणामों की यथार्थता को भी वर्णित किया गया है। इसमें कर्मों के उदय होने पर सुख-दुःख की प्राप्ति का वर्णन मिलता है। इस सन्दर्भ में सीता-निर्वासन का प्रसंग प्राप्त होता है, जिसमें वे अपनी लोकनिन्दा एवं निर्वासन के लिए पूर्वजन्म के कर्मों को दोष देती है-

**अइदारूणाण सामिय!; मह दोसो पुव्वकम्माणं।**[10]

इसके अतिरिक्त दशरथ-प्रव्रज्या प्रसंग में भी कर्मों को ही जन्म एवं मरण का कारण माना गया है, जिससे मनुष्य जन्म-मरण के चक्र से मुक्त नहीं हो पाता है-

**संसारम्मि य घोरे, अणेयभवसयसहस्ससंबन्धे।**

**उवट्टण-परियट्टण, करेन्ति जीवा सकम्मेहिं।।**[11]

इस प्रकार विमलसूरि ने विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से अहिंसा एवं कर्म के परिणामों को वास्तविक धरातल पर प्रस्तुत किया है।

**(iii) सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रणः-** पउमचरिअ में वर्गविशेष की स्थिति, मानवीय भावनाओं एवं संघर्षों को वास्तविक रूप में प्रकट किया गया है। इसके एक प्रसंग में कंचुकी वृद्धावस्था के दुष्परिणामों को यथार्थ रूप में चित्रित करता है कि वृद्धावस्था में शरीर काँपता है, साँस जोर से चलती है, थकान होती है और गति धीमी हो जाती है-

**तूरन्तस्स य अंग, कम्पइ बहुला हवन्ति नीसासा।**

**खेओ य समुप्पज्जइ, गई वि मन्दं समुव्वहइ।।**[12]

इसके अतिरिक्त नौकर की पराधीनता के विषय में भी उद्धृत किया गया है कि नौकर से श्रेष्ठ जीवन कुत्ते का होता है, जो स्वच्छन्द विचरण करता है-

**परघरलद्धाहारो, साणो होऊण वसइ सच्छन्दो।**

**भिच्चो परव्वसो पुण, विक्किदेहो नियकालं।।**[13]

पउमचरिअ में 'कपिल उपाख्यान' के अन्तर्गत धन की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि जिसके पास धन है, वह लोक में पण्डित, यशस्वी एवं महान है और इसके विपरीत धन से हीन मनुष्य तुच्छ है। साथ ही धनवान मनुष्य ही धर्म का पालन करने में समर्थ होता है।-

**जस्सऽत्थो तस्स सुहं, जस्सऽत्थो पण्डिओ य सो लोए।**

**जस्सऽत्थो सो गुरुओ, अत्थविहूणो य लहुओ उ।।**

**तस्स महत्थो य जसो, धम्मो वि यं तस्स होइ साहीणो।**

**धम्मो वि सो समत्थो, जस्स अहिंसा समुद्दिट्ठा।।**[14]

इस प्रकार सामाजिक जीवन की वास्तविकताओं को भी इसमें यथार्थ रूप से चित्रित किया गया है।

**(iv) धार्मिक जीवन का यथार्थ चित्रण:-** पउमचरिअ में धार्मिक उद्देश्यों के आधार पर जीवन की यथार्थता को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें अहिंसा, करूणा, त्याग, तपस्या, नैतिकता, वैराग्य आदि मूल्यों को विशेष महत्त्व दिया गया है, जिससे अंतरात्मा की शुद्धि होती है। पउमचरिअ में दशरथ-प्रव्रज्या प्रसंग में दशरथ के वैराग्य ग्रहण करने पर भरत स्वयं जीवन से अनासक्त होकर प्रव्रज्या ग्रहण करनेका विचार करते हैं, क्योंकि वे जीवन की अनित्यता से मुक्ति प्राप्त करना चाहते थे-

**सो भणइ नत्थि कज्जं, रज्जेण महं करेमि पव्वज्जं।**

**मा तिव्वदुक्खपउरे, ताय! भमिस्सामि संसारे।।**[15]

इसी प्रकार सीता के जिन धर्म में निरत होने का वर्णन भी प्राप्त होता है, जो परित्यक्त होकर धार्मिक जीवन व्यतीत करती हैं-

**धम्मकहासत्तमणा धम्मरई धम्मधारणुज्जुत्ता।**

**धम्मं अहिलसमाणी, गमेइ दियहे तहि सीया।।**[16]

इस प्रकार इसमें प्रत्येक पात्र जैन धर्म का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करता है और अंत में प्रव्रजित होकर मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं।

**(v) राजनीतिक स्थिति का यथार्थ चित्रण:-** पउमचरिअ में राजनीतिक व्यवस्था एवं स्थिति का भी यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है, जिसमें राजा, राज्य, उत्तराधिकार, युद्ध, मित्रता, शत्रुता और प्रतिष्ठा आदि का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त इसमें राज्य के संचालन में आवश्यक रणनीति, शक्ति और सैन्यक्षमता का भी उल्लेख मिलता है। पउमचरिअ में उत्तराधिकारी के सम्बन्ध में लक्ष्मण की यह उक्ति प्राप्त होती है कि जगत की परिपाटी के अनुसार राजाओं को ही राज्य मिलता है-

**एत्थ नरिन्दाण जए, परिवाडोआगयं हवइ रज्जं।**[17]

इसके अतिरिक्त इसमें राम-लक्ष्मण का हनुमान्-सुग्रीव से मित्रता करना और रावणादि राक्षसों से शत्रुता होना आदि भी राजनीतिक परिस्थितियों से सम्बन्धित है। इसमें भरत की प्रतिष्ठा के लिए राम-लक्ष्मण का अतिवीर्य से युद्ध करके उसे वश में करने का वर्णन भी मिलता है-

**एवं विमुक्क सन्तो, अइविरिओ राघवं पणमिऊणं।**

**संवेगसमावन्नो, पडिबुद्धो तक्खणं चेव।।**[18]

इस प्रकार से पउमचरिअ में तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों को भी वास्तविक रूप में प्रकट किया गया है।

**(vi) पारिवारिक जीवन का यथार्थ चित्रण:-**

पउमचरिअ में पारिवारिक संबंधों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, जिसके अन्तर्गत उनके दायित्त्वों, प्रेम, त्याग, सहयोग, कर्त्तव्यबोध और आपसी मतभेदों का यथार्थ चित्रण मिलता है। इसके 'दशरथ प्रव्रज्या' प्रसंग में कैकेयी के

वात्सल्यभाव का सजीव चित्रण प्राप्त होता है, जिसमें वे भरत को प्रव्रज्या ग्रहण करने से रोकने हेतु दशरथ से वर माँगती है-

**तो सव्वकलाकुसला, भरहं नाऊण तत्थ पडिबुद्धं।**

**सोगसमुत्थयहियया, परिचिन्तइ केगई देवी।।**

**न य मे पई न पुत्तो, दोण्णि वि दिक्खाहिलासिणो जाया।**

**चिन्तेमि तं उवायं, जेण सुयं वो नियत्तेमि।।**[19]

इसी प्रसंग में राम और भरत के भ्रातृत्व प्रेम का भी स्वाभाविक चित्रण मिलता है, जिसमें राम के स्नेहपूर्वक कहने पर भरत राज्य को स्वीकार कर लेते हैं-

**पउमो वि तं कुमारं, हत्थे घेत्तूण भणइ नेहेणं।**

**निक्कण्टयमणुकूलं, करेहि रज्जं सुचिरकालं।।**

**तायस्स विमलकित्ती, करेहि परिवालणं च जणणीए।**

**भरहेण य पडिभणिओ, न य तुज्झ वइक्कमं काहं।।**[20]

इसके पश्चात् राम स्वयं वनवास के लिए प्रस्थान कर जाते हैं।

इसके साथ ही इसमें व्यक्तिगत इच्छाओं और सामाजिक दायित्त्वों के मध्य होने वाले संघर्ष का भी प्रत्यक्ष वर्णन प्राप्त होता है। इस सन्दर्भ में सीता-निर्वासन का प्रसंग मिलता है, जिसमें राम निर्दोष एवं शीलसम्पन्न सीता का परित्याग करने को तैयार हो जाते हैं क्योंकि वे अपयशयुक्त जीवन व्यतीत नहीं करना चाहते थे-

**अवि परिचयामि सीयं, निहोसं जइ वि सीलसंपन्नं।**

**न य इच्छामि खणेक्कं, अकित्तिमलकलुसियं जीयं।।**[21]

वे लक्ष्मण के समझाने पर भी नहीं मानते हैं और लोकनिन्दा के भय से सीता का परित्याग कर देते हैं।

इस प्रकार विमलसूरि ने माता-पिता, संतान, भाई तथा पति-पत्नी के संबंधों के माध्यम से पारिवारिक जीवन की आत्मीयता, त्याग, प्रेम और संघर्ष को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

**(vii) स्त्री-जीवन का यथार्थ चित्रण:-** पउमचरिअ में स्त्री जीवन के संघर्षों एवं संवेदनाओं को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें वे अपने संघर्षों का सामना साहस, धैर्य, त्याग और आत्मविश्वास के बल पर करती है। इस सन्दर्भ में सीता की अग्निपरीक्षा का प्रसंग प्राप्त होता है, कि जिसमें वे करूणाभाव से युक्त होकर साकेतपुरी की जनता को क्षुब्ध सागर से बचाती हैं-

**दटठूण हीरमाणं, लोयं ताहे करेसु जणयसुया।**

**सलिलं फुसइ पसन्नं, जायं बावीसमं सहसा।।**[22]

इसके साथ ही सीता की भावुकता का स्वाभाविक चित्रण मिलता है, जिसमें वे मनुष्य जन्म से दुःखी होकर पुनः स्त्री रूप में जन्म न लेने की बात कहती है-

**तुज्झ पसाएण पहू, भुत्ता भोया सुरोवमा विविहा।**

**संपइ करेमि कम्मं, तं जेण न होमि पुण महिला।।**[23]

इसमें कैकेयी की सहानुभूति का भी यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है, जिसमें अपराजिता और सुमित्रा को दुखी देखकर वे भरत को राम-लक्ष्मण को लेने के लिए वन में भेजती हैं-

**ताणं चिय जणणीओ, पुत्तविओगम्मि जायदुक्खाओ।**

**काहिन्ति मा हु कालं, आणेहि लहुं वरकुमारे।।**[24]

पउमचरिअ में सीता के अपहरण प्रसंग में मंदोदरी की नैतिक चेतना और संघर्ष का भी यथार्थ पक्ष उद्घाटित होता है, जिसमें वे रावण से सीता को लौटाने की बात कहती है जिससे उसका यश परनारी के संसर्ग में मलीन न हो और एकमात्र व्रत की रक्षा भी हो सके-

**तम्हा अप्पेहि इमा, सीया रामस्स पणयपीईए।**

**परिवालेहि वयं तं, जं गहियं मुणिसयासम्मि।।**[25]

इस प्रकार विमलसूरि ने पउमचरिअ में स्त्री की संवेदनाओं और संघर्षों को सजीव रूप में प्रस्तुत किया है।

विमलसूरि ने इस रूप में सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक एवं धार्मिक पक्षों को सम्मिलित करके जीवन की वास्तविकताओं को यथार्थ धरातल पर प्रस्तुत किया है, जिसमें अलौकिक घटनाओं की अपेक्षा तर्क, नैतिकता और मानवीय व्यवहार को प्राथमिकता दी गई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विमलसूरिकृत 'पउमचरिअ' जैन परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण महाकाव्य है। इसमें रामकथा को जैन दृष्टिकोण के साथ ही नैतिक, सामाजिक एवं मानवीय दृष्टि के अनुरूप भी पुनर्स्थापित किया गया है। इन पुनर्सृजित रामकथा में मानवता, धर्म, आदर्श और यथार्थता का अद्भुत समन्वय प्राप्त होता है। इसमें वर्णित यथार्थता का सम्बन्ध दार्शनिक एवं धार्मिक चिंतन से प्रेरित है। विमलसूरि ने पउमचरिअ में विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियों को प्रस्तुत करके उससे सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के लिए नवीन दृष्टि प्रदान की है, जो उनकी यथार्थ बुद्धि का परिचय देता है। इस प्रकार विदित होता है कि पउमचरिअ केवल एक आध्यात्मिक महाकाव्य ही नहीं, अपितु यथार्थवादी चिंतन का प्रेरणास्त्रोत भी है।

**सन्दर्भ सूचीः-**

1. शास्त्री, डॉ0 नेमिचन्द्र (1992), तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य-परम्परा (द्वितीय खण्ड), आचार्य शान्तिसागर छाणी ग्रन्थमाला, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश), पृ0 259
2. प्रेमी, नाथूराम (1956), जैन साहित्य और इतिहास, हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड बम्बई, पृ0 90
3. डागा, डॉ0 तारा (2024), प्राकृत साहित्य की रूपरेखा, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, पृ0 112
4. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-प्रथम विभाग (5.257), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 55
5. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं प्रथम विभाग (6.89), प्राकृत ग्रन्थ परिषद, अहमदाबाद, पृ0 63
6. शास्त्री, डॉ0 नेमिचन्द्र (1966), प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी, पृ0 315

7. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-द्वितीय विभाग (73.24), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 422
8. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-प्रथम विभाग (14.153), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 153
9. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-प्रथम विभाग (26.62), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 221
10. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-द्वितीय विभाग (94.88), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 494
11. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-प्रथम विभाग (31.36), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 249
12. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-प्रथम विभाग (29.28), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 238
13. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-द्वितीय विभाग (94.81), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 493
14. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-प्रथम विभाग (35.66-67), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 280
15. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-प्रथम विभाग (31.80), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 252
16. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-द्वितीय विभाग (96.10), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 501
17. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-प्रथम विभाग (31.106), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 253
18. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-प्रथम विभाग (37.65), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 288
19. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं- प्रथम विभाग (31.63-64), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 251
20. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं- प्रथम विभाग (31.90-91), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 252
21. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-द्वितीय विभाग (94.12), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 489
22. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-द्वितीय विभाग (102.26) प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 526
23. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं-द्वितीय विभाग (102.43), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 527
24. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं- प्रथम विभाग (32.39), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 257
25. जेकोबी, डॉ0 हर्मन (2005), पउमचरियं- द्वितीय विभाग (70.14), प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, पृ0 410